This question paper contains 4 printed pages.

B.A. (Pt. - III) **Roll No. ....**

3102 - I - A

Hin. Lit. - I

B.A. (Part - III) EXAMINATION - 2021

(For Non - Collegiate Candidates)

(Faculty of Arts)

(Three Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

हिन्दी साहित्य

प्रथम प्रश्न पत्र

(आधुनिक काव्य)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर–पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) जाते जाते अगर पथ में क्लान्त कोई दिखावे।

तो जाके सन्निकट उसकी क्लान्तियों को मिटाना।

धीरे–धीरे परस करके गात उत्ताप खोना।

सद्गंधों से श्रमित जन को हर्षितों सा बनाना।।

संलग्ना हो सुखद जल के श्रान्तिहारी कणों से।

ले के नाना कुसुम कुल का गंध अमोदकारी।

निर्धूली हो गमन करना उद्धता भी न होना।

आते जाते पथिक जिससे पंथ में शांति पावें।। 10

अथवा

दो पग आगे ही वह धन है,
अवलम्बित जिस पर जीवन है।
पर क्या पथ पाता यह जन है?
मैं हूँ और अँधेरी।
रे मन, आज परीक्षा तेरी।
यदि वे चल आये हैं इतना,
तो दो पद उनको हैं कितना?
क्या भारी वह, मुझको जितना?
पीठ उन्होंने फेरी!
रे मन, आज परीक्षा तेरी।

(ख) कौन हो तुम वसंत के दूत
विरस पतझड़ में अति सुकुमार!
घन–तिमिर में चपला की रेख,
तपन में शीतल मंद बयार।
नखत की आशा–किरण समान,
हृदय के कोमल कवि की कांत
कल्पना की लघु लहरी दिव्य,
कर रही मानस–हलचल शांत! 10

अथवा

बिछा कार्यों का गुरूतर भार
दिवस को दे सुवर्ण अवसान
शून्य शम्या में श्रमित अपार,
जुड़ाती जब मैं आकुल प्राण,
न जाने मुझे स्वप्न में कौन
फिराता छाया जग में मौन!
न जाने कौन, अये द्युतिमान!

जान मुझको अबोध, अज्ञान,

सुझाते हो तुम पथ अनजान,

फूंक देते छिद्रों में गान,

अहे सुख–दुख के सहचर मौन!

नहीं कह सकती तुम हो कौन!

(ग) यह मधु है–स्वयं काल की मौना का युग–संचय,

यह गोरस–जीवन–कामधेनु का अमृत–पूत पय,

यह अंकुर – फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय,

यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्मा, अयुतः इसको भी शक्ति को दे दो

यह दीप, अकेला, स्नेह भरा

है गर्व भरा मदमाता, पर इसको भी पंक्ति को दे दो। 10

अथवा

देख–जलते स्पंदनों में क्या उलझता ही गया है,

जो नयी चिनगारियाँ

नव स्वप्न आलोक ले

उत्पन्न होती जा रही हैं,

उन सबलतम, तीव्र, कोमल देश की

चिनगारियों में

जो खिले हैं स्वप्न रक्तिम,

देख ले जी–भर उन्हें तू।

(घ) कुछ हैं जिन्हें शब्द मिल चुके हैं

कुछ हैं जो अक्षरों के आगे अंधे हैं

वे हर अन्याय हूँ को चुपचाप सहते हैं

और पेट की आग से डरते हैं

जबकि मैं जानता है कि 'इन्कार से भरी हुई एक चीख'

और 'एक समझदार चुप'

दोनों का मतलब एक है–
भविष्य गढ़ने में, 'चुप' और 'चीख'
अपनी–अपनी जगह एक ही किस्म से
अपना–अपना फर्ज अदा करते हैं। 10

अथवा

बाढ़ की संभावनाएँ सामने हैं,
और नदियों के किनारे घर बने हैं।
चीड़–वन में आँधियों की बात मत कर,
इन दरख्तों के बहुत नाजुक तने हैं।
इस तरह टूटे हुए चेहरे नहीं हैं,
जिस तरह टूटे हुए ये आइने हैं।
आपके कालीन देखेंगे किसी दिन,
इस समय तो पाँव कीचड़ में सने हैं।

2. महाकाव्य 'प्रिय–प्रवास' की विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

मैथलीशरण गुप्त के काव्य–सौष्ठव को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

3. 'जयशंकर प्रसाद राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना के कवि हैं।' कथन के संदर्भ में उनके काव्य की विशेषताओं का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए। 15

अथवा

सुमित्रानंदन पंत के काव्य–सौंदर्य पर उदाहरण सहित प्रकाश डालिए।

4. 'अज्ञेय प्रयोगवादी कवि हैं।' कथन के परिप्रेक्ष्य में उनकी काव्य विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 15

अथवा

मुक्तिबोध के काव्य की भावगत एवं शिल्पगत विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियाँ लिखिए:

(अ) भारतेन्दु युगीन कविता 7½

(ब) द्विवेदी युग की काव्य प्रवृत्तियाँ 7½

(स) दुष्यंत कुमार का काव्य 7½

(द) नई कविता 7½